उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)	इण्टरमीडिएट परीक्षा 'अ' (उत्तराखण्ड) 12 पन्ने

केन्द्र संख्या की मुहर	केन्द्र व्यवस्थापक के हस्ताक्षर	नोट—

(खण्ड-अ)

(उत्तर-01)

(क)

विज्ञान को विनम्र कहा गया है क्योंकि यह अपनी अवधारणाओं तथा अपने निष्कर्षों के प्रति हठी या अहंकारी नहीं होता है। विज्ञान नई खोजों तथा नए निष्कर्षों के आने पर अपनी मान्यता को बदल देता है।

(ख)

विज्ञान को अपनी बात मनवाने के लिए ताकत की ज़रूरत नहीं पड़ती क्योंकि विज्ञान विनम्र होता है। वह नई खोजों पे अपनी मान्यता मान्यता को बदल देता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से चलने वाले लोग सीधे-सरल होते हैं।

(ग)

पढ़ाई को तब सार्थक माना गया है जब वह हमारे मन में नए-नए प्रश्नों की **जिज्ञासा** को जन्म दें। क्योंकि उत्तर से अधिक महत्वपूर्ण प्रशन हैं। प्रशन करने वाला ही नेतृत्व कर सकता है।

(घ)

गद्यांश के अनुसार विज्ञान का अर्थ है- सत्य के अधिकतम निकट पहुँचने की कोशिश।

(ङ)

प्रश्न करना (✓)

(च)

पारंपरिक (✓)

(छ)

उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक 'विज्ञान की विनम्रता' अथवा 'विनम्र विज्ञान' होना चाहिए।

(उत्तर-03)

(क)

इसमें स्थायित्व होता है (✓)

(ख)

सनसनीखेज खबरें (✓)

(ग)

समाचार पत्र को अन्तिम रुप देना (✓)

(घ)

जो भुगतान के आधार पर स्वतंत्र कार्य करता है (✓)

(ङ.)

समाचार को प्रमाणित करना (✓)

(उत्तर-05)

- जन्म से ही - - - - - - - - - - - अकसर

(क)

पृथ्वी के घूमते हुए आने का आशय है कि जब ~~बच्चे~~ बच्चे पतंग उड़ाते है तो वे बेसुध छतों पर दौड़ते है। उनके इधर-उधर दौड़ने को ही कवि ने पृथ्वी के घूमने और उनके पास आने की बात कही है। वास्तव में बच्चे

छतों पर घूमते हैं।

(ख)

जन्म से ही अपने साथ कपास बच्चें लेकर आते हैं। इसका अर्थ है कि बच्चों का शरीर व मन के भाव कपास की तरह ही कोमल होते हैं।

(ग)

कविता का नाम – पतंग
कवि - आलोक धन्वा

(उत्तर-06)

- मैं निज ------------------------ फिरता हूँ।

शिल्प सौन्दर्य

कला पक्ष :- प्रस्तुत पंक्तियो में 'उर के उद्गार' व 'उर के उपहार' में अनुप्रास अलंकार है। स्वप्नों का संसार में भी अनुप्रास अलंकार है। प्रथम, दूसरी व चौथी पंक्ति तुकान्त है। तीसरी पंक्ति में अतुकान्तता है। भाषा सरल व सहज है। पंक्तियो में गेयता है।

• भाव पक्ष :- ~~मैं~~ प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कह रहे हैं कि वह अपने मन में लोंगो के लिए उपहार लिए फिरता हूँ। अर्थात कवि अपनी कविताओं द्वारा लोंगो का कल्याण करना चाहता है, जो उसके हृदय का उपहार है।

कवि कहता है कि उसके लिए यह संसार अपूर्ण है इसलिए वह अपने स्वपनों के संसार में रहता है।

(उत्तर - 07)

(क)

'बादल राग' कविता में कवि ने कहा है कि बादल क्रान्ति के दूत हैं। जब बादल आएंगे तो वर्षा होगी, जिससे पौंधो को नवजीवन मिलेगा और सब जगह हरियाली आएगी। उसी प्रकार जब क्रान्ति आएगी तो शोषित वर्ग के जीवन में बदलाव आएगा और उन्हें शोषण से मुक्ति मिलेगी।

कवि ने बादलों को नवचेतना व क्रान्ति का दूत माना है।

(ग)

'छोटा मेरा खेत' कविता में रचना के सन्दर्भ में 'अंधड' और 'बीज' का अर्थ निम्नलिखित

है –

- अंधड़ : कविता में अंधड़ का अर्थ भावनात्मक आँधी से है। जिस प्रकार आँधी आने से खेतों में फसल के बीज बोए जाते हैं, उसी प्रकार भावनात्मक आँधी से कविता के बीज बोए जाते हैं।

- बीज : यहाँ बीज का अर्थ विचार है। क्योंकि भावनाओं की आँधी उमड़ने के बाद ही कविता की फसल उगाने के लिए विचार रुपी बीज बोए जाते हैं।

(उत्तर-08)

(ii)

- एक बार ------------------ था ?

(क)

शिरीष की तुलना अवधूत से की गई है क्योंकि जिस प्रकार अवधूत सुख-दुःख सभी परिस्थितियों में समान रुप से व्यवहार करता है उसी प्रकार शिरीष गर्मी, सर्दी, वर्षा व आँधी सभी में खड़ा रहता है और वातावरण से अपना रस खींचता रहता है। शिरीष विपरीत परिस्थितियों में भी सरस बना ~~रह~~ रहता है।

(२घ)

न ऊधो का लेना, न माधो का देना - इसका अर्थ है कि शिरीष का अपने वातावरण से कोई लेना - देना है नहीं है। शिरीष, गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि में भी सरस बना रहता है। मौज में आठो याम मस्त रहता है।
शिरीष एक पक्के अवधूत की भाँति खड़ा रहकर वातावरण से अपना रस खींचता रहता है।

(ग)

उपर्युक्त गद्यांश के
लेखक - 'हज़ारी प्रसाद द्विवेदी'
पाठ - 'शिरीष के फूल'

(उत्तर-09)

(२ब)

जाति-प्रथा को श्रम विभाजन का आधार नहीं मानना चाहिए क्योंकि यह प्रथा श्रम का विभाजन उसकी जाति के आधार पर करती है। व्यक्तिग क्षमताओ व व्यक्ति की रुचि का कोई महत्व नहीं होता।
ऐसे में व्यक्ति अरुचि से टाल काम करता है और अच्छा उत्पादन नहीं कर पाता। वह अपना पेशा बदल भी नहीं सकता चाहे उसे भूखा ही क्यों न मरना पड़े।

(ग)

भक्तिन को अपने जीवन में बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ा। बचपन से ही वह विमाता के साथ रही। उसके माता-पिता ने पाँच वर्ष की आयु में बाल विवाह करा दिया। नौ वर्ष की आयु में उसका गौना हो गया। ससुराल में भी लड़कियों को जन्म देने के कारण उसकी उपेक्षा हुई। बँटवारे के बाद उसका पति मर गया और उसकी बेटी को भी विधवा होना पड़ा। उसकी सारी कमाई हुई सम्पत्ति परिवार के झगड़े की भेंट चढ़ गई।

(उत्तर-10)

(क)

यशोधर बाबू घर देर से आते थे क्योंकि उनके और उनकी पत्नी व बच्चों में छोटी-छोटी बातों पर मनमुटाव होता था। इसलिए वह बहुत समय लगाते थे।

(ख)

'जूझ' पाठ मे लेखक के पिता उसे पाठशाला नहीं भेजना चाहते थे ताकि लेखक खेतो में काम करे और उसके पिता रखमाबाई के कोठे पर पूरा दिन गुज़ार सकें। और पूरे गाँव में अवारा की तरह घूमते रहें।

(ग)

मराठी के शिक्षक का पढ़ाने का तरीका बहुत रोचक था। वह पूरे हाव-भाव से कविता को पढ़ाते थे। वह लय, ताल, गति और छंद आदि का ध्यान रखते थे। सुरीला गला और अभिनय के साथ शिक्षक पढ़ाने मे रम जाते थे।

(उत्तर - 11)

- ~~मोहन जो~~ मुअनजो-दड़ो सिन्धु घाटी सभ्यता की राजधानी और ताम्रकाल का सबसे बड़ा शहर था। यह सिंधु नदी के किनारे छोटे-छोटे टीलो पर बसा हुआ था। ये 5000 वर्ष पुराना था।
- इसका विस्तार 200 हेक्टेयर तक था और आबादी 50,000 थी। यह एक महानगर था।
- मुअनजो-दड़ो का सौन्दर्य उसका कला थी जो राजपोषित, धर्मपोषित न होकर समाज पोषित थी।
- मुअनजो - दड़ो मे सब सुनियोजित था। यहाँ की सड़के 33 फुट चौड़ी थी। नालियों को ढका हुआ था।
- यहाँ की एक और मुख्य आकर्षक वास्तुकला थी महाकुण्ड। ये 40 फुट लंबा, 25 फुट चौड़ा और 7 फीट गहरा था। ये पकी हुई ईटों से बना हुआ था। यहाँ दो पाँत मे 8 स्नानघर थे।
- ये संस्कृति पूर्णत: खेतिहार व पशुपालक

सभ्यता थी।

- मुख्य रूप से हम इसे जल संस्कृति भी कहते हैं।
- यहाँ से कई कलात्मक वस्तुए जैसे, ताँबे का आईना, चौपड़ की गोटियाँ, मुद्राएँ, नृत्तकी की मूर्ति, याजक नरेश की मूर्ति आदि भी मिले।

- मुअनजो-दड़ो भारत की प्राचीन संस्कृति की अमूल्य धरोहर है।

(खण्ड - ब)

(उत्तर - 12)

(ख)

सत्याग्रहान्दोलनसमये सः कारागारं प्रेषितः

(ग)

आजीवनं

(घ)

1937 तमे वर्षे एषः कांग्रेसदलस्य नेता चितः जातः तदनन्तरं संयुक्तप्रान्तस्य मुख्यमंत्री च अभवत।

(उत्तर-13)

(क)

नीचै: विघ्नभयेन कार्यं न प्रारभ्यते।

(ख)

मध्या: विघ्नविहिता: विरमन्ति।

(घ)

पुरुषा: त्रिविधा: (अधमा:, मध्यमा: उत्तम: च) भवन्ति।

(उत्तर-14)

(क)

"य: समुच्चस्य स्तम्भस्य शिखरं सर्वादौ प्राप्नुयात् स: विजयी भवेत"- इति सर्वै मण्डुकै निर्णीतम्।

(ख)

कवि: चातकं कथयति - "यं यं पश्यासि तस्य तस्य च पुरतो: दीनं वच: मा ब्रूहि"।

(ग)

अनुजः गृहपोषणं करोति स्म ।

(घ)

कक्षाप्रमुखा अदिति अस्ति ।

(उत्तर-15)

पद	वाक्य
क्रीडाति	बालकः कन्दुकेन क्रीडाति
वसुधा	
नगरम्	अहं नगरम् द्रष्टुम् इच्छामि ।
तिष्ठन्ति	छात्राः कार्यालये तिष्ठान्ति ।

(उत्तर-16)

(क)

करण कारक (✓)

(२ब)

कर्मधारय : (✓)

(ग)

नद्या (✓)

(घ)

स्वः (✓)

(ङ)

मूर्खोऽपि (✓)

(च)

पितुः + इच्छा (✓)

उत्तर (17)

श्लोक - हे जिह्वे! कटुकस्नेहे मधुरं किं न भाषसि,
मधुरं वद कल्याणि लोकोऽयं मधुरः प्रियः ॥

अर्थ - हे जीभ! कटुता से स्नेह रखने वाली तुम मीठा क्यों नहीं बोलती हो। मीठा बोलो कल्याण करने वाली, क्योंकि

यह संसार मधुरता से प्रेम रखने वाला है।

(उत्तर - 02)

—— हमारे जीवन में खेलों का महत्व ——

संकेत बिन्दु :—

प्रस्तावना
विद्यार्थियों के लिए खेलों का महत्व
खेल और जीवन का विकास
उपसंहार

- प्रस्तावना :- हमने कई बार एक बात सुनी है कि "पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब, खेलोगे-कूदोगे तो बनोगे खराब" - परन्तु ऐसा नहीं है। खेलों से कोई भी खराब नहीं बनता, अपितु खेलने-कूदने से तो मनुष्यों का विकास होता है। खेल हमारे जीवन में बहुत महत्व रखते हैं।

- विद्यार्थियों के लिए खेलों का महत्व :-

विद्यार्थियों के लिए खेलों का महत्व बहुत

अधिक है। लोगों की ऐसी अवधारणा है कि खेलने से विद्यार्थियों की पढ़ाई में बाधा उत्पन्न होगी, किन्तु ऐसा नहीं है। अपितु खेलों से तो बच्चों का शिक्षा में भी विकास होता है। खेलों से हमें अनेकों लाभ प्राप्त होते हैं –

- शारिरिक विकास :– खेलने कूदने से मनुष्यों का शारिरिक विकास होता है और शरीर में तंदरुसती आती है। खेलने कूदने वाला ~~बिद्यार्थि~~ विद्यार्थी ~~बिमार~~ बीमार भी कम पड़ता है। और कहा गया है कि –

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है।

- मानसिक विकास :– शरीर स्वस्थ होगा तो मन अपने आप स्वस्थ हो जाएगा। हमने सुना भी है कि अगर स्वस्थ मन होगा तो ही ठीक रुप से कार्य कर पाएगा। और शरीर स्वस्थ खेलने से होता; जिसमे स्वस्थ मन का वास होता है।

जब विद्यार्थी का मानसिक विकास सुचारु रुप से होगा तो ही वह शिक्षा ग्रहण कर पाएगा।

- आध्यात्मिक विकास :– जब शरीर स्वस्थ होगा, तो मन स्वस्थ ~~है~~ होगा और ऐसे में

ही व्यक्ति का आध्यात्म की तरफ मन लगेगा। और विद्यार्थी भी अपने जीवन में आध्यात्म को उतार पाएगा और मानसिक शान्ति का अनुभव कर पाएगा।

- नैतिक विकास :- यदि विद्यार्थी खेल खेलेगा तो वह 'टीम वर्क' व 'स्पोर्टसमैनशिप' जैसे मूल्यों को अपने जीवन में उतार पाएगा। और अपने जीवन में मूल्यो से विकास कर पाएगा।

- खेल और जीवन का विकास :- खेलो से न सिर्फ मनुष्यों का शारिरिक विकास होता है अपितु हम देखते है कि आज के युग में खेलों में अपना करियर भी बना रहे है। फिर चाहे वो क्रिकट विराट कोहली आदि हो ~~आय~~ ऑलंपिक्स मे नीरज चोपड़ा। आज खेल केवल विकास का ही नहीं बल्कि जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग बन गया है।
  आज आप अपना भविष्य भी खेलों में बना सकते है।

- उपसहांर - यदि विद्यार्थी अपने खेलों के माध्यम से शारिरिक, मानसिक, आध्यात्मिक व नैतिक विकास कर इसका इस्तेमान पढ़ाई में करे तो वह ~~नवाब~~ नवाब

बन सकता है। अत: हम कह सकते है कि खेलो से भी विकास हो सकता है।

खेलेगा भारत ...
बढ़ेगा भारत ...

(उत्तर-4)

(आलेख)

पहाड़ के वीरान होते गाँव....

आज हम देखते है कि हमारे पहाड़ो के गाँव वीरान हो रहे है। पहाड़ी जीवन कष्टदाई होता है। वहाँ रहना आसान नही होता। आए दिन पहाड़ दरकते है और जान-माल को भी क्षति पहुँचती है। किन्तु गाँवो के वीरान होने का कारण सिर्फ यही नही है।

पहाड़ो पे लोगो को जल आदि की कोई सुविधा नही होती। कहने को तो नदियों का मुख्य स्रोत पहाड़ ही है किन्तु पीने योग्य पानी की सुविधा वहाँ नही है। दूसरा है बिजली पहाड़ो पर बसे होने के कारण लोगों को बिजली की सुविधा नही दी सकती है। तीसरा है आवागमन, पहाड़ो पर आवागमन की बहुत परेशानी है और सबसे मुख्य कारण है बेरोज़गारी। पहाड़ो पर

रोज़गार उपलब्ध नहीं है जिस
कारण लोग वहां से पलायन
कर रहे है। सरकार
सरकार को इन गाँवो को वीरान
होने से बचाने के लिए ठोस
कदम उठाने चाहिए। गाँवो में
पानी की, बिजली की व आवागमन
की सुविधाएँ बनानी चाहिए। और
सबसे महत्वपूर्ण वहां के लोगों के
लिए रोज़गार उपलब्ध करना
चाहिए। ताकि हमारे गांव व
संस्कृति बची रह सके।

पहाड़ी संस्कृति को बचाना है
तो बेरोज़गार को मिटाना है।